International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2014; 1(4): 132-136

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2014; 1(4): 132-136
www.allsubjectjournal.com
Received: 01-09-2014
Accepted: 14-09-2014
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979

डॉ. भगत सिंह
एसोशिएट प्रोपेफसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रा।

Correspondence:
डॉ. भगत सिंह
एसोशिएट प्रोपेफसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रा।

सांस्कृतिक अध्ययन का ôोतः प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित पशु–पक्षी

डॉ. भगत सिंह

आदिमानव का अपने जीवन के प्रारंम्भिक चरण में जिन मानवेत्तर प्राणियों से सामना हुआ, उनमें पशु, पक्षी प्रमुख थे। प्रारंम्भ में मनुष्य जंगलों में, कन्दराओं में निवास करता था तथा पशु–पक्षियों का शिकार करके अपना पेट भरता था। कालान्तर में जब मनुष्य ने समूह बनाकर एक स्थान पर रहते हुए कृषि कार्य शुरू किया तो धीरे–धीरे मनुष्य के जीवन–यापन का प्रमुख आधार पशु पक्षी हो गए। पशुओं का मानव जीवन को सुदृढ़ता प्रदान करने में प्रमुख योगदान रहा है। अतः पशुओं के प्रति मानव की श्रद्धा स्वाभाविक हो गई।[1] मानव ने पशुओं का प्रयोग भोजन के साथ–साथ दूध, वस्त्र के लिए खाल, कृषि एवं परिवहन के लिए भी इसका उपयोग किया जो उस समय मानव के लिए दैवीय महत्त्व से कम न था। मानव जीवन के विविध क्षेत्रों में यथा धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों इत्यादि में पशुओं के महत्त्व के साक्ष्य हमें प्राचीन भारतीय कला से भी मिलते है। प्राचीन कला में उन सभी पशु–पक्षियों को अंकित किया गया है जो किसी न किसी रूप में मानव से सम्बद्ध रहे है।[2] इसी प्रकार प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर पशु–पक्षियों के विविध रूप दर्शाये गये है।

वृषभः– भारतीय संस्कृति एवं कला में वृषभ जीवन के आनन्द और मंगल का प्रतीक है। जनकल्याण की शक्तियों का सबसे बड़ा संरक्षक देवता 'शिव' इसी पर अधिष्ठित है। प्रारंम्भ में वृषभ का कला में स्वतन्त्र अंकन मिलता है पर बाद के कालों की कला में इसे देवता के प्रतीक एवं वाहन (नंदी) के रूप में अधिक महत्ता मिली।

सिन्धु सभ्यता में सर्वाधिक संख्या में वृषभ का अंकन मुद्राओं पर मिलता है। विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं में बैल को शक्ति का प्रतीक माना गया है और शायद सिन्धु सभ्यता में भी इसका यही महत्त्व था। कुछ मुद्राओं पर छोटे सींग वाले बैल को माला पहने दिखाया गया है।[3] मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुद्रा पर छोटे सींग वाले वृषभ का अंकन महत्त्वपूर्ण जान पड़ता है। कुछ मुद्राओं पर बैल के कंधे और गलकम्बल को बड़ी कुशलता से व्यक्त किया गया है। बैल के आगे नन्दी को भी दिखाया गया है।[4] मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक कूबड़ वाले बैल की आकृति वाली मुद्रा की मार्शल द्वारा काफी प्रशंसनीय माना गया है। इस मुद्रा में अंगों के उभार व शरीर के अनुपात में जो विशिष्टता दिखाई गई है। वह अपूर्व है। इसी प्रकार एक मुद्रा में एक व्यक्ति बैल के पीछे ध्वज लिए अंकित है। ऐसा प्रतीत होता है कि पशु रूपी देवता को प्रसन्न करने के लिए उसे खाद्य सामग्री भेंट की जाती थी। इसके अतिरिक्त विभिन्न मुद्राओं से वृषभ का अंकन उसकी धार्मिक महत्ता का सूचक प्रतीत होता है। सिन्धु मुद्राओं पर अंकित बैल को ब्राह्मी बैल माना गया है, जो बाद में शिव के वाहन रूप में प्रतिष्ठित हुआ।[5]

आह्त मुद्राओं पर वृषभ का अंकन विविध रूपों में दिखाई पड़ता है। कोसल जलपद की आह्त मुद्राओं पर जो सहेत–महेत निखात से मिली है उन पर अन्य प्रतीकों के साथ वृषभ का अंकन मिलता है। इसी निखात से प्राप्त एक मुद्रा पर वृषभ जुआठे में जुते हुए हल के साथ अंकित है।[6] मगध जनपदीय काल की आह्त मुद्राओं पर वामाभिमुख व दक्षिणाभिमुख वृषभ का अंकन मिलता है। चेदि जनपद की ईनामदार निधि की कुछ आह्त मुद्राओं पर चार प्रतीकों के समूह में वृषभ का भी अंकन है।[7] अवन्ति जनपद की आह्त मुद्राओं से चार प्रतीकों के समूह में एक जोड़ी वृषभ हल–जुआठा के साथ अंकित है, जो नागदा निखात से प्राप्त हुई है। उड़ीसा में सोनपुर तथा मध्यप्रदेश के बालाधार जिले के घापेवारा नामक स्थान से प्राप्त मुद्राओं पर एक जोड़ी बैल तथा हल के साथ एक वामाभिमुख वृषभ तथा दो अन्य प्रतीक अंकित किये गये है।[8] ढ़ालित मुद्राओं से भी वृषभ का अंकन मिलता है। वैशाली के उत्खनन से प्राप्त कुछ चकौर ढालित ताम्र मुद्राओं के एक तरफ वृषभ प्रतीक मिलता है। इसी प्रकार कौशाम्बी से प्राप्त ढ़ालित मुद्रा पर ककुद्मान वृषभ का अंकन है। जे.एन. बनर्जी के अनुसार प्राचीन सिक्कों पर वृषभ का अंकन प्रायः शिव का ही प्रतिनिधित्व करता है।[9] मौर्य काल में भी वृषभ का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

मौर्योत्तर काल के बाद शुंग शासकों की मुद्राओं पर वृषभ का स्पष्ट अंकन मिलता है। इन मुद्राओं के पृष्ठभाग पर रश्मियुक्त वृत्त के अन्दर वामाभिमुख वृषभ का स्पष्ट अंकन मिलता है। यौधेय जन की मुद्राओं के अग्रभाग पर बैल खड़ा हुआ है और उसके सामने वेदिका के भीतर ध्वज का अंकन है।[10]

अर्जुनायन जन की ताम्र मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर वामाभिमुख वृषभ को दर्शाया गया है। पौर जनपदीय सिक्कों के ऊपर वृषभ का अंकन विविध रूपों में किया गया है। पुष्कलावती से प्राप्त पौर जनपद की एकमात्र सोने की मुद्रा पर वृषभ का अंकन अनेक रूपों में प्राप्त होता है।

शक शासकों की मुद्राओं पर भी वृषभ का अंकन मिलता है। शक शासक मोअ द्वारा जारी की गई ताम्र मुद्राओं के पृष्ठभाग पर कुकदमान वृषभ का अंकन मिलता है। एजेज की मुद्राओं पर भी ऐसा ही अंकन है।[12] इसी प्रकार पश्चिमी शक क्षत्रप शासक जयदामन की ताम्र चकौर मुद्रा के अग्रभाग पर त्रिशूल–परशु के सम्मुख खड़े वृषभ का अंकन किया गया है। कुषाणकालीन मुद्राओं पर वृषभ को शिव के साथ स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है, जो शिव के वाहन रूप में प्रदर्शित है। विमकेडफिसस की स्वर्ण एवं ताम्र मुद्राओं के पृष्ठभाग पर नन्दि के साथ त्रिशूलधारी शिव को अंकित किया गया है।[13]

गुप्तकाल में वृषभ पौराणिक पृष्ठभूमि से जुड़ा था। गुप्त शासक स्कन्दगुप्त की चांदी की एक भांत की मुद्रा के पृष्ठभाग पर मध्य में दक्षिणाभिमुख या वामाभिमुख बैठा वृषभ का अंकन मिलता है।[14] जो गुप्तकालीन सिक्कों पर वृषभ की महत्ता का सूचक है।

हाथी:– हाथी वैभव एवं धन का सूचक है तथा प्रकृति के जीवन शक्ति का प्रतीक है। भारतीय धर्म में इसका विभिन्न देवताओं से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। गज का कला में स्वतन्त्र अंकन इसकी महत्ता को निरूपित करता है। सभी भारतीय धर्मों जैसे हिन्दू, बौद्ध तथा जैन में गज की महत्त रही है। सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मुद्राओं एवं मुहरों पर हाथी का अंकन मृण्यमूर्तियों की अपेक्षा अधिक मिलता है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुद्रा पर हाथी के साथ अन्य पशुओं का अंकन भी मिलता है।[15] इसी प्रकार यहां से एक अन्य ताम्र मुद्रा भी प्राप्त हुई है जिस पर हाथी का अंकन है। आहत सिक्कों पर हस्ति का अंकन धार्मिक एवं आर्थिक महत्ता को देखते हुए किया गया होगा। पंचाल जनपद की आहत मुद्राओं पर गज का अंकन वामाभिमुख एवं दक्षिणाभिमुख रूपों में मिलता है। बिजनौर निधि से प्राप्त चांदी की चकौर, गोल एवं अण्ड़ाकार मुद्राओं पर अन्य प्रतीकों के साथ महावत युक्त गज का अंकन मिलता है।[16] सौराष्ट्र जनपद की आहत मुद्राओं पर अन्य प्रतीकों के साथ गज प्रमुखता से अंकित है। कोसल जनपद की पैला निधि से मिली चांदी की आहत मुद्राओं पर कौसल प्रतीक के साथ वभार्वत या दक्षिणावत गज का अंकन समान रूप से अधिकांश मुद्राओं पर मिलता है। नागदा से प्राप्त कुछ आहत मुद्राओं पर चार प्रतीकों में से एक हाथी है जो अधिकांश मुद्राओं पर वामावर्त अथवा दक्षिणावर्त एकल रूप (एक साथ) अंकित मिलते है। उड़िसा में सोनपुर के पास व मध्य प्रदेश में बालाघाट जिले के छापेवारा स्थान से प्राप्त मुद्राओं पर तीन अंकनों के साथ वामाभिमुख हाथी का अंकन भी किया गया है।[18] इसी प्रकार अगरतल्ला से प्राप्त चांदी की कुछ आहत मुद्राओं पर भी अन्य प्रतीकों के साथ वामाभिमुख गज का अंकन प्राप्त हुआ है।

मगध साम्राज्य की आहत मुद्राओं पर गज का अंकन अन्य प्रतीकों के साथ मिलता है। रामनगर निधि से प्राप्त आहत मुद्राओं पर वामाभिमुख हस्ति का अंकन किया गया है।[19] राजघाट उत्खनन से प्राप्त आहत मुद्राओं पर भी हस्ति प्रतीक का अंकन मिलता है। ऐरण बेसनगर से प्राप्त तांबें की आहत मुद्रा के अग्रभाग पर दक्षिणाभिमुख गज का अंकन मिलता है जो सूड उठाकर दहाड़ते हुए प्रदर्शित है। ढ़ालित ताम्र सिक्कों पर भी गज प्रतीक का अंकन बहुतायत रूप में प्राप्त होता है।[20] वैशाली के उत्खनन से प्राप्त तांबें की चकौर मुद्राओं के कुछ भांतों के अग्रभाग पर समान रूप से वामाभिमुख गज का अंकन अन्य तीन प्रतीकों के साथ मिलता है।[21] कौशाम्बी से प्राप्त चकौर ढ़ालित ताम्र मुद्राओं पर चार प्रतीकों के समूह में चलता हुआ वामाभिमुख गज अंकित है।[22] तक्षिला से प्राप्त चकौर ताम्र मुद्राओं पर एक तरू तीन हाथी युक्त झुण्ड़ का अंकन प्राप्त होता है। इस प्रकार प्राचीन मुद्राओं पर गज का अंकन उत्तर भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में हाथी की महत्ता को व्यक्त करते हैं।[23]

हिन्द–यूनानी मुद्राओं पर गज का विविध रूपों में अंकन मिलता है। चांदी की एक मुद्रा के अग्रभाग पर भागते हुए हाथी पर घुड़सवार द्वारा भाले से आक्रमण करते हुए प्रदर्शित किया गया है। हिन्द–यूनानी शासक डेमेट्रियस और उसके वंशजों को हस्ति–मुण्ड़ धारण किये सिक्कों पर अंकित दिखाया गया है।[24] मौर्योत्तर कालीन प्राप्त सिक्कों पर जो शुंग एवं उसके बाद वाले काल के है उन पर अंकित गज धार्मिक महत्ता के घोतक है। यौधेय मुद्राओं के पृष्ठभाग पर दक्षिणाभिमुख हस्ति तथा उसके ऊपर पताका का अंकन किया गया है।[25] पौर जनपद की मुद्राओं पर गज के विविध प्रकार के अंकन मिलते है। इसी प्रकार शुक्तिमती पौर जनपद की एक ताम्र मुद्रा पर एक ओर ऊपर उज्जयिनी प्रतीक तथा नीचे वामाभिमुख गज एवं अन्य अस्पष्ट प्रतीक अंकित है।[26] आयोध्या से प्राप्त मुद्राओं पर गजलक्ष्मी का अंकन मिलता है।[27] मथूरा से प्राप्त मुद्राओं के पृष्ठभाग पर महावत युक्त तीन हस्तियों का पक्तिबद्ध अंकन किया गया है।

आंध्र सातवाहन शासकों की मुद्राओं पर हस्ति का स्पष्ट अंकन मिलता है। श्रीसतक की मुद्राओं पर दक्षिणाभिमुख हस्ति का अंकन किया गया है। अल्तेकर द्वारा मालवा क्षेत्र से प्राप्त एक मुद्रा पर दक्षिणाभिमुख हस्ति का अंकन मिलता है।[29] इसी तरह अन्य कई सातवाहन शासकों की मुद्राओं पर गज का अंकन मिलता है। कुषाण कालीन कला में हाथी का अंकन शुंग कला की निरन्तरता के रूप में दिखाई पड़ता है। कुषाण शासकों की मुद्राओं पर हाथी का अंकन विभिन्न रूपों में प्राप्त होता है। कुषाण शासक विमकैडफिसस की कुछ स्वर्ण मुद्राओं पर एक तरफ उसे हाथी पर सवार रूप में अंकित किया गया है। हुविष्क को भी एक ताम्र मुद्रा में हस्ति पर आरूढ़ दिखाया गया है।[30]

गुप्त युगीन कला में गज का लक्ष्मी के साथ प्रचुर अंकन मिलता है। कुमार गुप्त प्रथम के गजारोही प्रकार की मुद्रा पर गज का अंकन बहुत ही गरिमामयी रूप में दिखाया गया है।[31]

अश्व:– भारतीय कला में अश्व को शक्ति एवं स्फूर्ति का प्रतीक माना गया है। इसका सम्बन्ध प्राचीन भारतीय धर्मों में विभिन्न देवताओं से भी था। बौद्ध तथा जैन धर्म में इसे धार्मिक पशु माना गया है। भारतीय शासको द्वारा जारी की गई विभिन्न मुद्राओं में अश्व का अंकन मिलना जो इसकी महत्ता को परिलक्षित करता है। भारतीय शक शासकों की मुद्राओं पर अश्व का अंकन मिलता है। कुछ सिक्कों पर चाबुक लिए सवार सहित अश्व का अंकन किया गया है।[32] तकक्षिला से प्राप्त सीसे की कुछ मुद्राओं पर सवार सहित अश्व का अंकन मिलता है। इन सिक्कों पर अश्व का अंकन राजनीतिक महत्त्व के रूप में दिखाई पड़ता है।[33] सिक्कों में यूप व अश्व का अंकन अश्वमेघ यज्ञ का प्रतीक है। इस प्रकार का अंकन यौधेयों व अर्जुनानयन जनपद की मुद्राओं पर मिलता है।[34] वाराणसी क्षेत्र से प्राप्त दो ताम्र मुद्राओं पर एक तरफ दक्षिणाभिमुखी अश्व का अंकन है। पौर जनपद की एक मुद्रा में अग्रभाग पर अश्व का अंकन मिलता है। कौशाम्बी से प्राप्त ढालित मुद्राओं पर दक्षिणाभिमुख अश्व अंकित है।

शक शासक चष्टन की चकौर ताम्र मुद्रा के एक तरफ दक्षिणभिमुख खड़ा अश्व अंकित है। इसी प्रकार का अंकन सातवाहन शासक यज्ञश्री सातकर्णी की मुद्रा पर मिलता है।[34]

गुप्तकाल में अश्व धार्मिक व राजनीतिक महत्त्व का पशु रहा है। गुप्त शासकों के अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान का पता उनके द्वारा जारी सिक्कों से चलता है। समुद्रगुप्त की अश्वमेध प्रकार की मुद्रा पर अश्व का चित्रण मिलता है। मुद्रा में अश्व को खड़ा दिखाया गया है तथा अश्व के सामने यूप बना है। कुमार गुप्त प्रथम के अश्वमेध प्रकार की मुद्रा पर भी अश्व का अंकन मिलता है।[35] इस प्रकार की मुद्रा में अश्व को सुज्जित दाहिनी तरफ यूप के सामने खड़ा दिखलाया गया है।

सिंह का अंकनः– सिन्धु सभ्यता की कला में बाघों का अंकन सर्वाधिक मुद्राओं एवं मुहरों पर मिलता है। एक मुद्रा पर एक मनुष्य वृक्ष की शाखा पर बैठा हुआ दिखाया गया है तथा शाखा के निचे खड़ा व्याघ्र उसे देख रहा है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त पशुपति की मुद्रा में व्याघ्र को पशुपति के दायीं तरफ उत्कृष्ट रूप में दिखाया गया है।[36] मोहनजोदड़ों से ही मिट्टी की एक तिकोनी मुद्रा छाप के एक तरफ कतार में अन्य पशुओं के साथ बाघ को दर्शाया गया है। मोहनजोदड़ों से ही प्राप्त कुछ अन्य मुद्राओं पर अर्ध मानव व अर्ध पशु आकृति को श्रृंगयुक्त बाघ पर आक्रमण करते हुए अंकित किया गया है। यह दृश्य हड़प्पा की एक मुद्रा पर भी कुछ परिवर्तन के साथ अंकित है।[37] गुप्त शासकों के सिक्कों पर सिंह विशेष रूप से अंकित है। इन सिक्कों पर सिंह का अंकन आखेट पशु तथा वाहन के रूप में मिलता है। चन्द्रगुप्त प्रथम के राजारानी प्रकार की मुद्रा के पृष्ठभाग पर वाहन के रूप में सिंह का अंकन मिलता है।[38] इसी प्रकार चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिंह निहन्ता प्रकार की मुद्रा के पृष्ठभाग पर भी सिंह को देवी के वाहन रूप में चित्रित किया गया है।[39] समुद्रगुप्त के सिक्कों पर भी व्याघ्र निहन्ता प्रकार में सिंह का अंकन मिलता है। कुछ सिक्कों पर राजा झपटते हुए व्याघ्र को अपने पैर से कुचल रहा है। कुमार गुप्त प्रथम की सिंह निहन्ता प्रकार की मुद्रा में सिंह को देवी के वाहन रूप में अंकित किया गया है। कुमार गुप्त प्रथम के राजारानी प्रकार की मुद्रा के पृष्ठभाग पर भी सिंह का अंकन वाहन रूप में प्राप्त होता है।[40] इसी तरह गुप्त शासकों के सिक्कों पर सिंह का अंकन आखेट रूप में भी मिलता है।

हिरणः– मृग को भारतीय कला में प्रतीकात्मक महत्त्व का पशु माना गया है। मृग का अंकन मुद्राओं व मुहरों पर सिन्धु काल से ही मिलता है। हड़प्पा कालीन पशुपति मुद्रा के नीचे की और दो हिरणों का अंकन धार्मिक महत्ता का जान पड़ता है।[41] कुछ आहत मुद्राओं पर भी मृग का अंकन मिलता है। कुणिन्द जनपद के शासक अमोधभूति के सिक्कों पर मृग का अंकन प्रमुख रूप से हुआ है। यौधेय जनपद के भी एक प्रकार के सिक्कों पर खड़े हुए मृग का अंकन है।[42] कन्नौज से प्राप्त विष्णु देव के सिक्कों पर अर्द्धचन्द्र के ऊपर छलांग लगाते हुए मृग का अंकन है।[43]

गैंड़ा (दरियाई घोड़ा)– आदिकालीन पशुओं में गैडे का अंकन भी विभिन्न मुद्राओं पर मिलता है। सिन्धु युगीन कला में गैड़ा विभिन्न मुद्राओं पर दिखाई पड़ता है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुद्रा पर एक श्रृंगी पशु और गैड़े के शरीर के अवयवों का समाकलित रूप है। इसका शरीर एक श्रृंगी पशु का है परन्तु कान, सींग और पैर गैड़े के है जो धार्मिक महत्त्व का जान पड़ता है।[44] यही से प्राप्त एक मुद्रा पर छः पशुओं का अंकन है जिनमें एक गैडा भी है। मोहनजोदड़ो व हड़प्पा से प्राप्त मुद्राओं पर गैंडे का चित्रण हुआ है। पशुपति प्रकार की मुद्रा पर गैंड़े को बायीं तरफ अंकित किया गया है यहां गैंडे का देवता से सम्बन्ध दिखाया गया है।[45] इस प्रकार सिन्धु मुद्राओं पर गैडें का अंकन स्वाभाविक रूप से किया गया है। एक मुद्रा पर गैंडे के शरीर को इस प्रकार दर्शाया गया है कि चर्म की सिकुड़न भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।[46] गैंड़े को कुछ मुद्राओं पर नांद के साथ दर्शाया गया है। गुप्तयुगीन कला में गैंडे का अंकन सिक्कों पर दिखाई देता है। गैंडें का सिक्कों पर अंकित करना राजनीतिक महत्त्व का जान पड़ता है। सर्वप्रथम कुमार गुप्त प्रथम की खड़्ग–निहन्ता प्रकार में आखेट के रूप में गैंडे का अंकन प्राप्त होता है। राजा घोड़े पर सवार होकर अपने दाहिने हाथ से गैंडे को मारने के लिए उद्दत है, वही गैंड़ा डटकर मुकाबला करने के लिए खड़ा है, गैंडे का मुंह खुला हुआ है। इसमें गैंडे की आकृति वास्तविक एवं पूर्ण है। इसी प्रकार की अन्य मुद्राओं पर गैंडे का अंकन अपूर्ण मिलता है। कुमार गुप्त द्वारा जारी की गई एक मुद्रा पर गैंडे के चेहरे का क्रोध दर्शनीय है जो स्पष्टतः प्रकट हो रहा है।[47] इस मुद्रा को कुमारगुप्त ने सम्भवतः अपनी कामरूप विजय की सफलता के बाद जारी किया गया। कामरूप क्षेत्र में गैंड़ो की अधिकता थी।[48] बाद के कालों की कला में भी गैंडे को अंकित किया गया, जो प्रतीक या अलंकरण रूप में दिखायी पड़ता है।

पक्षियोंः– पक्षी और मानव का सम्बन्ध प्राचीन काल से ही घनिष्ठ रहा है। पशुओं की तरह पक्षी भी मानव के लिए धार्मिक, सामाजिक व धार्मिक महत्ता रखते थे। भारतीय मुद्राओं पर पशुओं के साथ–साथ पक्षियों का अंकन प्राचीन काल से ही मिलता है। मुद्राओं में पक्षियों का अंकन विविध मान्यताओं के अनुरूप दिखाई पड़ता है।

मयूरः– भारतीय कला में मयूर को सर्वोत्कृष्ट मान्यता मिली है। मयूर को सर्प का शत्रु होने के कारण विद्या या ब्रह्म ज्ञान का प्रतीक माना गया है।[49] सिन्धु मुद्राओं पर पक्षियों के अनेक दृश्य मिलते है जिनमें मयूर का अंकन भी मिलता है। भारत की प्राचीनतम आहत मुद्राओं पर पक्षियों का अंकन व्यापकता से किया गया है। मयूर को इन मुद्राओं पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गोलकपुर निखात से प्राप्त तथा मगध साम्राज्य से सम्बन्धित चांदी की कुछ प्रकार की मुद्राओं पर मयूर का अंकन मिलता है।[50] यौधेय शासकों की मुद्राओं पर भी मयूर का अंकन मिलता है, जिसमें मयूर को कार्तिकेय के वाहन रूप में दर्शाया गया है। मालव जन की कार्कोट नगर से प्राप्त सिक्कों पर सिंह एवं मयूर प्रतीक अंकित है।[51] गुप्त कला में मयुरों को धार्मिक एवं राजकीय दोनों दृष्टियों से अंकित किया गया। गुप्त शासकों के सिक्कों पर मयूर को राजकीय पक्षी एवं देवता के वाहन रूप में अंकित किया गया है। सर्वप्रथम कुमार गुप्त के अश्वारोही प्रकार वाले सिक्कों पर मयूर का अंकन मिलता है। इस मुद्रा के पृष्ठभाग पर देवी मयूर को कुछ खिलाती हुई प्रदर्शित की गई है।[52] कुमार गुप्त का नाम कार्तिकेय से जुड़ा हुआ था। कार्तिकेय का वाहन मयूर होने के कारण कुमार गुप्त ने मयूर प्रकार की मुद्राएं चलायी। कुमार गुप्त प्रथम के गजारूढ़ सिंह निहन्ता प्रकार में भी मयूर का अंकन मिलता है, इसमें हाथी, सिंह एवं मयूर का संयुक्त अंकन प्राप्त होता है। कार्तिकेय प्रकार की मुद्रा के अग्रभाग पर राजा मयूर को अंगूर खिलाते हुए प्रदर्शित है। इस मुद्रा के पृष्ठभाग पर मयूर को वाहन रूप में दर्शाया गया है मुद्रा में मयूर को एक चबुतरे पर बैठा हुआ दिखाया गया है। मयूर के ऊपर प्रभामण्ड़ल युक्त कार्तिकेय को सवार दिखाया गया है, जिसका हाथ मयूर की गर्दन पर रखा है। कुमारगुप्त की गंगाधाटी में प्रचलित रजत मुद्राओं के चार उपप्रकार पाये गए हैं[58], चारों मुद्राओं के पृष्ठभाग पर मयूर पंख फैलाए हुए खड़ा मिलता है। स्कन्दगुप्त की रजत मुद्राओं पर भी कुमार गुप्त की भांति मयूर का अंकन मिलता है। इन मुद्राओं में पृष्ठभाग पर पंख फैलाए हुए मयूर को प्रदर्शित किया गया है।[54] इसी प्रकार बुद्धगुप्त की रजत मुद्राओं में पृष्ठभाग पर हमें पंख

फैलाये हुये मयूर का अंकन मिलता है।[55] इस प्रकार प्राचीन मुद्राओं में मयूर का अंकन विविध रूपों में मिलता है जो इसकी महत्ता का प्रतीक भी है।

गरूड़:– गरूड़ का भारतीय मुद्राओं में विशिष्ट स्थान रहा है। इसे प्राचीन काल से ही वैष्णव धर्म का प्रतीक माना गया है। हड़प्पन मुद्राओं पर भी गरूड़ का अंकन मिलता है। हड़प्पा की एक मुद्रा पर गरूड़ को दिखाया गया है। जिसमें गरूड़ के फैले हुए पैरो के ऊपर दो सर्पो का भी अंकन है। आहत मुद्राओं पर गरूड़ का अंकन मिलता है। मुद्राओं में सर्वप्रथम पंचाल शासक विष्णुमित्र के सिक्कों पर मिलता है। इसमें गरूड़ को दोनों हाथों से सांप पकड़े हुए दिखाया गया है।[57] कुषाण कला में गरूड़ को स्वतन्त्र अंकन के साथ–साथ विष्णु के वाहन रूप में भी प्रदर्शित किया गया है।
गुप्तकालीन गरूड़ध्वजी शैली के सिक्कों पर इसके विभिन्न रूप दर्शाये गये हैं। गुप्त मुद्राओं पर गरूड़ का अंकन दो रूपों में मिलता है। कुछ मुद्राओं पर दण्ड़ के ऊपर गरूड़ बैठा दिखलाई पड़ता है तथा कुछ मुद्राओं पर गरूडध्वज के रूप में इसका अंकन मिलता है। गुप्त वंश के शासकों की धर्नुधारी प्रकार की मुद्रा पर गरूड़ का अंकन मिलता है। समुद्रगुप्त की मुद्राओं में गरूड़ध्वज का अंकन मिलता है यहां पर गरूड़ध्वज के ऊपर अर्द्धचन्द्र भी अंकित किया गया है।[58] कॉचगुप्त द्वारा जारी की गई दण्ड़धारी प्रकार की मुद्रा पर राजा को गरूड़ध्वज के साथ दिखाया गया है। इसमें गरूड़ ध्वज दाहिनी तरफ अंकित किया गया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय की धर्नुधारी प्रकार वाली मुद्राओं पर गरूड़ ध्वज का अंकन मिलता है।[59] सामान्तः पश्चिमी भारत में रजत मुद्राओं पर गरूड़ ध्वज की आकृति चन्द्रगुप्त द्वितीय से स्कन्दगुप्त तक रही है। चन्दगुप्त द्वितीय की छत्रधारी प्रकार की ताम्र मुद्रा पर पृष्ठभाग के ऊपरी हिस्से पर गरूड़ की आकृति बनी है। जिसमें शरीर पक्षी का बना हुआ है तथा चेहरा व हाथ मनुष्य के है, यह पंख फैलाए हुए सामने की तरफ देख रहा है।[60]
कुमार गुप्त प्रथम के धर्नुधारी प्रकार की कुछ मुद्रा पर गुरूड़ध्वज को अंकित किया गया है। कुमार गुप्त की ही एक स्वर्ण मुद्रा पर गरूड़ पक्षी के रूप में दिखायी पड़ता है। मुद्रा के अग्रभाग पर बिन्दू–विभूषित वर्तुल के अन्दर पंख फैलाये गरूड़ की आकृति मिलती है। इसी तरह से कुमार गुप्त की ताम्र व रजत मुद्राओं पर भी गरूड़ का स्पष्ट चित्रण मिलता है।[61] कुमार गुप्त प्रथम के बाद के सभी शासकों स्कन्दगुप्त, नरसिंह गुप्त, कुमारगुप्त–द्वितीय, बुधगुप्त, विष्णुगुप्त इत्यादि के कुछ सिक्कों पर गरूड़ का अंकन मिलता है जो गुप्त शासको के वैष्णव धर्मानुयायी होना सिद्ध करता है।

कुक्कटः– कुक्कट को कला में हम सिन्धुकाल से ही देखते है जो अन्य पक्षियों के साथ दिखाई पड़ता विभिन्न शासको की मुद्राओं से कुक्कट की महत्ता सिद्ध होती है। आहत सिक्को पर भी कुक्कट का अंकन स्पष्ट रूप से मिलता है।[62] अगरतल्ला से प्राप्त कुछ आहत मुद्राओं पर अन्य प्रतीकों के साथ कुक्कट का अंकन भी मिलता है। यौधेय शासकों के प्रारंम्भिक सिक्कों पर मयूर से पहले कुक्कट का अंकन था। चर्तुथ सदी ई. में कुक्कट का महत्त्व कम हो गया तथा मयूर को वाहन व कुक्कट को आयुध के रूप में मान्यता मिल गई।[63]

अन्य पक्षीः– प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर उपरोक्त पक्षियों के अतिरिक्त हंस, शुक्र, उल्लूक आदि पक्षियों का अंकन मिलता है। गुप्त सम्राटों के सिक्कों पर हंस का अंकन समचरदेव द्वारा जारी की गई मुद्राओं पर मिलता है।[64] इस मुद्रा में कमलासीन सरस्वती के निचे हंस को प्रदर्शित किया गया है। हंस अपनी चोंच से कमल की पत्तियां तोड़ रहा है। एक अन्य मुद्रा प्रकार में सनाल कमलधारिणी लक्ष्मी के पैरों के समीप हंस को दिखाया गया है।[65] उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि भारतीय कला में पशु–पक्षियों का प्रारम्भिक काल से ही स्वतन्त्र अंकन किया गया बाद में विभिन्न शासको द्वारा अपनी–अपनी मुद्राओं पर विभिन्न देवताओं के प्रतीक एवं वाहन के रूप में अंकन प्रारंम्भ हो गया जिनका विंहगम दृश्य गुप्त, गुप्तोत्तर तथा मध्यकाल में दिखाई पड़ता है। भारतीय मुद्राओं पर पशु–पक्षियों का अंकन राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्ता के साथ–साथ अलंकरण एवं समृद्धि की दृष्टि से भी अंकित किया गया जिसका महत्त्व आधुनिक समय में भी देखने को मिलता है।

संदर्भ सूची

1 सिंह, दिलीप कुमार, प्राचीन भारतीय कला में प्रकृति पूजा, 2012, पृ. 51
2 वही
3 मार्शल, जॉन, मोहनजोदड़ो एण्ड इण्डिस सिविलाइजेशन, जिल्द–3, 1931ख फलक 112
4 अग्रवाल, वी.एस., भारतीय कला, 1966, पृ. 41
5 थपल्याल, किरण कुमार एवं एस.पी. शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1975, पृ. 188
6 गुप्ता, पी.एल., भारत के पूर्व कालीक सिक्के, 2006, पृ. 44, 45
7 वही, पृ. 47–48
8 वही, पृ. 51
9 इण्ड़ियन हिस्टारिकल क्वार्टरली, खण्ड–16, पृ. 4
10 कुमार, वाजपेयी, ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, 1997, पृ. 50
11 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 171
12 वही, पृ. 133
13 वही, पृ. 209
14 वही, पृ. 280
15 अग्रवाल, वी.एस., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 43
16 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 30
17 वही, पृ.
18 शर्मा, सविता, अर्ली इण्ड़ियन सिम्बल्स, 1994, पृ. 59
19 वही, फलक चित्र 3 ए, 12–13
20 एलन, जॉन, कैटलॉग ऑफ द क्वायन्स इन द ब्रिटिश म्यूजियम, एन्शियण्ट इण्ड़िया, पृ. 141
21 वही, पृ. 85–86, क्रम संख्या 1, 6, 10
22 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 92
23 अग्रवाल, वी.एस., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 93
24 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 110–111
25 एलन, जॉन, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 267–270
26 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 174
27 एलन, जॉन, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 133–134, क्रम संख्या 27–32
28 शर्मा, सविता, पूर्वनिर्दिष्ट, फलक–8, पृ. 14
29 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 209–210
30 बयाना निधि, फलक– 31, 3
31 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 136
32 वही, पृ. 138
33 डिवल्पमेन्ट ऑफ हिन्दू आईकोनाग्राफी, पृ. 110–111

34 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 244
35 मुखर्जी, छन्दा, गुप्ता न्यूमिस्मेटिक आर्ट, पृ. 75
36 थल्पल्याल, किरण कुमार एवं एस.पी. शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1975, पृ. 117
37 वही, पृ. 187, चित्र 50, 3
38 एलन, जॉन, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 40, फल्क–8, चित्र सं. 17
39 अल्तेकर, ए.एस., गुप्तकालीन मुद्राएं, पृ. 76–77, फल्क सं. 6, चित्र सं. 1–3
40 बयाना निधि, फलक संख्या, 13, 14
41 थल्पत्याल, किरण कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 180
42 जॉन, एलन, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 273–75, फलक–40, 20
43 वही, पृ. 147
44 थल्पल्याल, के.केत्र, एस.पी. शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1975, पृ. 187
45 मार्शल, जॉन, मोहनजोदड़ों एण्ड इण्डियस सिविलाइजेशन, जिल्द–3, 1931, सील सं. 420
46 थल्पल्याल, के.के., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 117
47 बयान निधि, फलक संख्या, 30–5, 6, 7, 8
48 इण्डियन हिस्टारिकल क्वार्टली, 31, संख्या–2, पृ. 125
49 र्गग, ताराचन्द, प्रतीकोत्पासना, 203, पृ. 25
50 गुप्ता, पी.एल., भारत के पूर्वकालिक सिक्के, पृ. 69–74–76
51 एलन, जॉन, कैटेलॉग ऑफ द क्वायंस इन द ब्रिटिश म्यूजियम, एन्शियन्ट इंड़िया, पृ. 276
52 गुप्ता, पी.एल., पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 170
53 बयाना निधि, फलक 23, 11 व फलक 24, 3 तथा फलक संख्या 25, 1
54 अल्तेकर, ए.एस., गुप्तकालीन मुद्राएं, फलक संख्या– 21, 20वां
55 ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, फलक, 28, 3, फलक 18, 7 तथा फलक 18, 12
56 थल्पल्याल, किरण कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 117
57 पाण्ड़ेय, प्रभाकर, प्राचीन भारतीय कला में प्रतीक, 2001, पृ. 182
58 अल्तेकर, ए.एस., गुप्तकालीन मुद्राएं, फलक–2
59 वही, पृ. 59, 60, फलक 11, 14
60 ब्रिटिश म्यूजियम कैटेलॉग, फलक, 9, 15
61 अल्तेकर, ए.एस., पूर्वनिर्दिष्ट, फलक संख्या–, 11, 14
62 एलन, जॉन, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 51, क्रम संख्या– 56–58
63 पाण्ड़ेय, प्रभाकर, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ. 186
64 अल्तेकर, ए.एस., द क्वॉयन्स एज ऑफ द गुप्ता एम्पायर, पृ. 328
65 एलन, जॉन, कैटेलॉग ऑफ द क्वायंस ऑफ गुप्ताज, पृ. 150, चित्र 24